मेहनतकशों का पैग़ाम
मेहनतकशों के नाम

मज़दूर मोर्चा

साप्ताहिक

Email : mazdoormorcha365@gmail.com
www.mazdoormorcha.com
Postal Reg. No. L-2/FBD/463/2021-23 /R.N.I. No. 2022007062

मेवात में नहीं चली 'नफरत की दुकान', संघ-भाजपा थैली के चट्टे-बट्टे परेशान 2
कांग्रेस व मानव सेवा संघ ने 'भाजपा गद्दी छोड़ो' का नारा दिया 4
'नूंह में जो हो रहा है वह नस्ली सफाए वाली हिंसा है' 5
इससे पहले कि मुल्क भूल जाए वह दर्दनाक हादसा ! 6
चुनावी झुनझुना है एयरपोर्ट जैसा रेलवे स्टेशन 8

वर्ष 37 | अंक -39 | फरीदाबाद | 13 अगस्त-19 अगस्त 2023 | फोन-8851091460 | ₹ 5.00

बजरंगियों का फूलों के बजाय जूतों से स्वागत करने पर बौखलाई खट्टर सरकार

बदले की कार्रवाई में चल रहा बुलडोजर व पुलिस का दमन चक्र

मज़दूर मोर्चा ब्यूरो

बीते नौ साल के दौरान केंद्र में मोदी व राज्य में खट्टर सरकार की नाकामी व तमाम जनविरोधी कार्रवाइयों के चलते भाजपाइयों को आगामी चुनावों में अपना सूपड़ा साफ़ होता नज़र आ रहा है। ये लोग इस बात से परेशान से हैं कि वोट मांगें तो किस नाम पर मांगें? अब इतना समय तो रहा नहीं कि वे कोई काम करके दिखा सकें, वैसे यदि समय हो तो भी इनके बस का कुछ करना है नहीं, क्योंकि ये लोग लूट-मार के अलावा और कोई काम जानते भी नहीं। झूठे प्रचार द्वारा लोगों को बेवकूफ बनाने में ये लोग अपने आप को माहिर मानते हैं। इसीलिए हिंदू धर्म को खतरा बताकर जनता को मुसलमानों के विरुद्ध लड़ाने की तैयारी में जुटे हुए हैं। इसी तरह ये विभिन्न जातियों को भी आपस में लड़ाने की भी महारत रखते हैं जिसका खुला प्रदर्शन इन्होंने 2016 के जाट आरक्षण आंदोलन के दौरान किया था।

हिंदुओं को मुसलमानों से भिड़ाने के लिए फरीदाबाद में बिट्टू बजरंगी जैसे कई गुंडे पाले गए थे तो मानेसर में मोनू जैसे अपराधियों को गोरक्षक का तमगा देकर पाला गया था। बीते करीब एक डेढ़ साल से ये लोग हर तरह से कोशिश कर रहे थे कि मुसलमान भड़क कर कोई हिंसक वारदात करें। कभी उन्हें

नमाज़ पढ़ने से रोकना, कभी उन्हें गाय के नाम पर मार डालना, कभी उनका किसी न किसी बहाने बहिष्कार करना आदि, आदि।

लेकिन इस बार मुसलमान काफी सयाने साबित हुए उन्होंने बहुत ही सब्र और तहम्मुल से काम लिया और चुपचाप रह गए। उन्होंने कभी पलट कर जवाबी कार्रवाई करने का रास्ता नहीं पकड़ा। मुसलमानों के सयानेपन से संघी बड़े परेशान हो उठे थे, चुनाव का समय निकट आता जा रहा है और मुसलमान भड़क नहीं रहे थे, इसलिए अब ये फ़ैसला किया गया कि सीधे इनके घरों यानी मेवात में जाकर इन्हें भड़काया जाए जिससे कि वह भी बदले की कार्रवाई करें। इसी सोची समझी साज़िश के तहत बिट्टू बजरंगी व मोनू जैसे संघ द्वारा पोषित अपराधियों ने 31 जुलाई को एक धार्मिक यात्रा की ओढ़नी ओढ़ कर मेवातियों पर हल्ला बोल दिया।

अपराधियों की इस सेना द्वारा भिवानी,हिसार, फतेहाबाद, टोहाना, कैथल, करनाल, पानीपत, जींद, नरवाना आदि तक के उन नौजवानों को बहला-फुसला कर लाया गया था जिन्हें आरएसएस ने हिंदुत्व की ताज़ी-ताज़ी चटनी चटाई थी। उन बेचारों को यह नहीं पता था कि उनके साथ वहां क्या होने वाला है, सैकड़ों की संख्या में विभिन्न प्रकार की गाड़ियों में लद कर ये लोग मेवात की ओर कूच करने लगे, बिट्टू बरजंगी जैसे ग़ुंडे इन नौसिखिए अंधभक्तों की हौसला अफ़ज़ाई के लिए वीडियो वायरल कर रहे थे कि वे दामादों की तरह ससुराल जा रहे हैं जहां उनका फूल मालाओं से स्वागत होगा, भक्त बेचारे भी बाराती बनकर बड़े खुश थे। हिदायत के मुताबिक तमाम बाराती गाड़ियों में हर तरह के असलहे आदि रखे गए थे।

पूर्व चेतावनी पाए मेवाती भी बारातियों का स्वागत करने को पूरी तरह से तैयार थे। ज्यों ही चढ़ाई करके आने वाले मोनू और बारात लेकर आने वाले बिट्टू की सेना मेवातियों की व्यूह रचना में फंस गए तब न मोनू का पता चला न बिट्टू का। भीड़ को बहका कर लाने वाले ये शातिर लोग तो चतुराई से नौ-दो ग्यारह हो गए। फंस गए बेचारे वे बाराती जो फूल माला पहनने को आए थे। खूब पिटे और चप्पल छोड़ छोड़ भागे, पजामे गीले हो गए, पुलिस पुलिस चिल्लाने लगे, क्योंकि उन्हें ये बताया गया था कि पुलिस उनका पूरा साथ देगी लेकिन मौके से पुलिस वाले नेताओं से पहले ही भाग खड़े हुए थे।

शेष पेज दो पर

हिंदू बनाम मुस्लिम तो हो न सका, खट्टर बनाम विज ज़रूर हो गया

मज़दूर मोर्चा ब्यूरो

संघियों द्वारा मेवात में हिंसा भड़काने में असफल होने के चलते हरियाणा के मुख्यमंत्री मनोहरलाल खट्टर व गृहमंत्री अनिल विज बौखलाहट के मारे आए दिन बड़े अजीबो गरीब बयान दिए जा रहे हैं। विज ने तो यह कह कर कमाल ही कर दिया कि उन्हें तो इस घटना की जानकारी नलहड़ के मंदिर में फंसे लोगों में से किसी एक ने फोन पर दी तो कहीं उन्हें जाकर पता लगा कि मेवात में इतना बड़ा कांड हो गया। विज ने यह भी कहा बताते हैं कि वहां के एसपी तरुण सिंघल छुट्टी पर थे इसलिए वहां से किसी ने उन्हें जानकारी नहीं दी।

दरअसल, इस बयान के माध्यम से विज यह कहना चाहते हैं कि बेशक पुलिस महकमा तो उनके पास है लेकिन खबर देने का जो यंत्र तंत्र है। यानी सीआईडी का महकमा, तो खट्टर ने अपने पास रखा हुआ है। विदित है कि सीआईडी चीफ सीधे मुख्यमंत्री को रिपोर्ट करते हैं और मुख्यमंत्री तो गृहमंत्री को रिपोर्ट करने से रहे। अपने इस बयान के द्वारा विज अपनी इस खीज को जाहिर करते हैं जो वे सीआईडी महकमे को लेकर खट्टर के प्रति रखते हैं। वैसे विज के इस बयान से अधिक बेहूदा एवं मूर्खतापूर्ण कोई बयान हो नहीं सकता। थोड़ी बहुत प्रशासनिक समझ रखने वाले भी ये जानते हैं कि सीआईडी रिपोर्ट कोई मुख्यमंत्री के कान में जाकर नहीं देता, वह रिपोर्ट मुख्यमंत्री के साथ-साथ गृह सचिव व डीजी को भी जाती है क्योंकि रिपोर्ट द्वारा मिली जानकारी पर कोई कार्रवाई तो गृह सचिव एवं डीजीपी को ही करनी होती है न कि मुख्यमंत्री को। यदि ये दोनों अधिकारी भी विज को जानकारी नहीं देते हैं तो विज को गृह मंत्रालय पर बोझ बने रहने का कोई अधिकार नहीं है।

विदित है कि प्रत्येक जिला पुलिस अधीक्षक कार्यालय में भी एक सिक्योरिटी ब्रांच होती है जो जिले भर की तमाम सूचनाएं एकत्र करके पुलिस अधीक्षक को देते हैं। ये तमाम सूचनाएं ब-राहे रास्त तमाम उच्चाधिकारियों तक पहुंचती हैं। यदि एसपी साहब छुट्टी पर चले गए थे तो बाकी महकमे को तो ताला नहीं लगा गए थे, सारा महकमा तो ज्यों का त्यों चल ही रहा था। एसपी के ऊपर एडीजीपी रेवाड़ी व उनके ऊपर डीजीपी व अन्य अधिकारी भी तमाम रिपोर्टों को देख रहे थे इसके बावजूद भी यदि विज को जानकारी नहीं मिल रही तो फिर वे अपनी काबिलियत के बारे में खुद ही फ़ैसला कर लें। महकमाना रिपोर्टों के अलावा तमाम मीडिया भी इस बारे में रिपोर्टें प्रकाशित करता आ रहा था।

मेवात में हिंदू-मुसलमान की कहानी, एक मास्टर की जुबानी

मेरे प्यारे दोस्तों मैं अनिल भारती जेबीटी अध्यापक जिला नूह खंड नगीना के राजकीय प्राथमिक पाठशाला जरगाली में कार्यरत हूं।

मैंने मेवात में जिला परिषद के तहत दिसंबर 2004 में बतौर शिक्षक ड्यूटी ज्वाइन की थी। तब यह गुड़गांव जिले में आता था, मेरा अप्वाइंटमेंट लेटर एडीसी गुड़गांव बलराज सिंह मोर ने जारी किया था। तब अप्वाइंटमेंट लेटर में मुझे खंड नगीना का नांगल मुबारकपुर गांव एलॉट हुआ था।

उस समय एडीसी बलराज सिंह मोर का जो गनमैन था वह मेरा क्लास फैलो था, जिला भिवानी खंड तोशाम का रहने वाला था, क्योंकि ज्वाइन करने से पहले 2 दिन तक मैं पुलिस लाइन गुड़गांव के अंदर उसी के पास रुका हुआ था, उसने मुझसे पूछा कि कौन सा गांव एलॉट हुआ है? मैंने उसको अपॉइंटमेंट लेटर दिखाया और बताया कि मुझे खंड नगीना का नांगल मुबारकपुर गांव मिला है। उसकी प्रतिक्रिया थी कि 'मेवात है' बचकर नौकरी करना। लेकिन मैं यहां ज्वाइन करने के लिए आ गया और ज्वाइन करने के अगले दिन ही

नूह में तैनात मास्टर अनिल भारती

15 दिन का शीतकालीन अवकाश हो गया था। मैं जब 10 जनवरी 2005 को ड्यूटी ज्वाइन करने निकला तो घर वालों ने एक ही बात कही, बेटा तेरा जल्दी से ट्रांसफर करवा देंगे, जब तक आचार संहिता हट जाएगी, तुरंत बाद हमारा काम हो जाएगा।

हमें दिसंबर 2004 में आचार संहिता लागू होने की जल्दबाजी में ज्वाइन कराया गया था, क्योंकि अगले दिन आचार संहिता लगनी थी। धीरे-धीरे मेवात में रहा, समय गुजरता गया और मुझे लगा कि यहां मैं अपने बच्चों को भी रख सकता हूं, तो मैं मई 2005 में अपनी फैमिली को लेकर नांगल मुबारकपुर में सेट हो गया। नांगल मुबारकपुर गांव में इतना प्यार, प्रेम और इज्जत मिली कि शायद ही मुझे कहीं और मिल पाती। वहां पर रहकर मैंने छठी, सातवीं और आठवीं के बच्चों को मैथ, साइंस और प्राइमरी क्लास के बच्चों को बड़े जतन और तन- मन से मेहनत करके पढ़ाया-सिखाया, और बच्चों ने भी मुझे पूरा सहयोग किया। गांव वालों ने भी पूरा सहयोग दिया, नांगल मुबारकपुर गांव में मैं 12 साल तक रहा। 12 साल में मैंने इतने बच्चे पढ़ा दिए, इतनी इज्जत मिली कि बताया नहीं जा सकता। अभी मेरे पढ़ाए काफी बच्चे ऐसे हैं जो पढ़ लिख कर के अच्छे मुकाम पर पहुंच गए हैं।

सितंबर 2016 में मैंने इंटर डिस्ट्रिक्ट ट्रांसफर के लिए अप्लाई किया लेकिन बच्चों की दुआ से मेवात के प्यार से मेरा ट्रांसफर नहीं हुआ। मैंने फिर से अंतर्जनपद तबादले

शेष पेज दो पर